ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 1, January 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण

डॉ कलंदर बाषा शेक, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, शासकीय महाविद्यालय, पेद्दापाल्ली तेलंगाना

सारांश

हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण भारतीय समाज के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करता है। इस वर्ग का जीवन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत जटिल होता है, जिसे हिंदी कहानियाँ बड़ी सूक्ष्मता से प्रस्तुत करती हैं। मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण न केवल समाज के सामान्य जीवन की वास्तविकताओं को दिखाता है, बल्कि यह सामाजिक असमानता, आर्थिक संघर्ष और पारिवारिक संबंधों के दबावों को भी सामने लाता है। हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक जैसे प्रेमचंद, यशपाल और निर्मल वर्मा ने इस वर्ग के जीवन की जटिलताओं, सपनों और संघर्षों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है।आर्थिक अस्थिरता, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, और सामाजिक दबाव इन कहानियों के प्रमुख विषय हैं, जिनके माध्यम से लेखक मध्यवर्गीय जीवन की सच्चाइयों को उजागर करते हैं। शहरीकरण और उपभोक्तावाद के प्रभावों के साथ–साथ पारंपरिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच संघर्ष को भी हिंदी साहित्य में देखा जा सकता है। इस प्रकार, हिंदी कहानियाँ न केवल इस वर्ग के अनुभवों को प्रस्तुत करती हैं, बल्कि समाज के उन मूल्यों और आदर्शों पर भी सवाल उठाती हैं, जो समय के साथ बदल रहे हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन के चित्रण की गहराई से विश्लेषण करना और यह समझना है कि इन कहानियों के माध्यम से समाज की कौन सी सच्चाइयाँ उजागर होती हैं।

1 परिचय

हिंदी साहित्य का विकास भारतीय समाज और संस्कृति के विकास के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। हिंदी साहित्य ने समय–समय पर समाज की विभिन्न श्रेणियों, जैसे उच्च वर्ग, निम्न वर्ग, और विशेष रूप से मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित किया है। हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय समाज के उस वर्ग को दर्शाता है जो अपने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए निरंतर संघर्षरत रहता है। मध्यवर्ग भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, और इसकी समस्याएँ, आशाएँ, आकांक्षाएँ और संघर्ष साहित्य में प्रकट होती हैं।

हिंदी कहानियाँ समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करती हैं, जिनमें परिवार, शिक्षा, राजनीति, और सामाजिक बदलाव प्रमुख हैं। मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण हिंदी कहानियों में इस प्रकार किया गया है कि यह पाठकों को न केवल समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराता है, बल्कि उन्हें जीवन की गहरी समझ भी प्रदान करता है। हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन को एक ऐसे समाज के रूप में दिखाया गया है जो अपनी सीमाओं और संघर्षों के बावजूद अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा करने की कोशिश करता है।

समाज के इस वर्ग का चित्रण हिंदी साहित्य में विभिन्न लेखकों ने किया है, जिनमें प्रेमचंद, यशपाल, महादेवी वर्मा, और आचार्य चतुरसेन जैसे लेखक शामिल हैं। इन लेखकों ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, समस्याओं और आकांक्षाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। इस वर्ग की सामाजिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति की वास्तविकता को दिखाने के कारण हिंदी साहित्य का यह हिस्सा न केवल भारतीय समाज के समझने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विश्व साहित्य में भी एक अहम स्थान रखता है।

1.1 हिंदी साहित्य का पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य का इतिहास भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ा हुआ है। संस्कृत साहित्य के बाद, हिंदी साहित्य ने विशेष रूप से मध्यकाल में एक नई दिशा पकड़ी, जब विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का मिलाजुला प्रभाव पड़ा। हिंदी साहित्य का प्रारंभ मुख्य रूप से भक्ति आंदोलन से हुआ, जिसमें संतों और कवियों ने सामाजिक सुधारों की ओर ध्यान आकर्षित किया। संत तुलसीदास, सूरदास, कबीर और मीराबाई जैसे महान कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से धार्मिक और सामाजिक मुद्दों पर प्रहार किया।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में, हिंदी साहित्य ने एक नया मोड़ लिया, जब भारतीय समाज में ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आधुनिकता और जागरूकता का प्रसार हुआ। इस समय के हिंदी लेखकों ने भारतीय समाज की असमानताओं, अन्याय और गुलामी के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। प्रेमचंद, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, और आचार्य चतुरसेन जैसे लेखकों ने हिंदी साहित्य में समाजिक यथार्थवाद को प्रमुखता दी। प्रेमचंद की कहानियाँ, जैसे ष्बनष और ष्कफनष्, मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं को बहुत ही बारीकी से चित्रित करती हैं।

बीसवीं शताबदी में हिंदी साहित्य में नारीवाद, समाजवाद, और राष्ट्रीयता के विचारों का प्रभाव बढ़ा। इस दौरान हिंदी उपन्यास, कहानी, नाटक, और कविता में विभिन्न शैलियाँ और शैलियों का विकास हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य में लेखकों ने समाज के हर वर्ग, विशेषकर मध्यवर्गीय जीवन, की सच्चाइयों को उजागर किया। इस समय के साहित्यकारों में मन्नू भंडारी, निर्मल वर्मा और महाश्वेता देवी जैसे लेखक प्रमुख रहे हैं। उनके साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन के संघर्षों, समाज के बदलते मानदंडों और व्यक्तिगत मुक्ति के प्रश्नों का संवेदनशील चित्रण किया गया है।

1.2 हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का महत्व

- **सामाजिक यथार्थ का चित्रण:** हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन को दर्शाने से समाज की वास्तविक समस्याएँ और संघर्ष सामने आते हैं, जैसे आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक समस्याएँ, और सामाजिक दबाव।
- **मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण:** मध्यवर्गीय जीवन में व्यक्ति की मानसिक स्थिति, उसकी आकांक्षाएँ, और दबावों का चित्रण उसे और अधिक जीवंत बनाता है।
- **आधुनिकता और परंपरा का संघर्ष:** हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों के बीच संघर्ष को प्रमुखता से दिखाया गया है।
- **सामाजिक और आर्थिक असमानता:** हिंदी साहित्य में इस वर्ग की संघर्षों का विश्लेषण समाजिक और आर्थिक असमानता को उजागर करता है, और इसके
- **कला और साहित्य में योगदान:** हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण भारतीय साहित्य को समृद्ध करता है और इस वर्ग के संघर्षों को विश्व साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाता है।

1.3 शोध पत्र के उद्देश्य

1. **मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकता को उजागर करना:** हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को पहचानना और उनका विश्लेषण करना।
2. **साहित्य में सामाजिक परिवर्तन की भूमिका:** हिंदी साहित्य के माध्यम से समाज में आए सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों का अध्ययन करना।

3. **लेखकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण:** प्रमुख हिंदी लेखकों जैसे प्रेमचंद, यशपाल आदि के दृष्टिकोण का अध्ययन करना और यह समझना कि उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन को कैसे चित्रित किया।
4. **मध्यवर्गीय जीवन के मुद्दों पर चर्चा:** परिवार, शिक्षा, कामकाजी जीवन, और आर्थिक संघर्ष जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करना।
5. **समाज के बदलते मूल्यों की पहचान:** हिंदी कहानियों के माध्यम से बदलते हुए समाजिक मूल्यों और जीवनशैली की पहचान करना और यह देखना कि इन परिवर्तनों ने साहित्य में कैसे स्थान पाया।

2 हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण

2.1 प्रमुख विषय: परिवार, सामाजिक स्थिति, आर्थिक संघर्ष

हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण उन विषयों के माध्यम से होता है जो इस वर्ग के सामाजिक और आर्थिक हालात को दर्शाते हैं। परिवार, सामाजिक स्थिति और आर्थिक संघर्ष प्रमुख विषय हैं जो अक्सर इन कहानियों का हिस्सा होते हैं।

परिवार हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। परिवार के सदस्य अक्सर एक–दूसरे के प्रति जिम्मेदारियों और अपेक्षाओं से जूझते हैं। माता–पिता, बच्चों और दाम्पत्य संबंधों के बीच सामंजस्य की समस्या मध्यवर्गीय जीवन का प्रमुख पहलू है। अक्सर, परिवार की खुशहाली के लिए व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत सपनों और आकांक्षाओं को त्यागने की स्थिति में होना पड़ता है।

सामाजिक स्थिति का भी गहरा प्रभाव है। मध्यवर्ग अपने सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए लगातार संघर्ष करता है। उनके लिए समाज की मान्यताएँ और कुरीतियाँ एक अनजाना दबाव बनती हैं, जो उनकी जीवनशैली, रिश्ते, और फैसलों को प्रभावित करती हैं।

आर्थिक संघर्ष एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। नौकरी की असुरक्षा, बढ़ती महंगाई, और आर्थिक स्थिति में अस्थिरता इन पात्रों के जीवन में हमेशा एक अनिश्चितता का माहौल बनाती है। ऐसे संघर्षों में न केवल परिवार की समृद्धि पर असर पड़ता है, बल्कि यह पात्रों के मानसिक और भावनात्मक जीवन को भी प्रभावित करता है। इन आर्थिक समस्याओं का चित्रण इन कहानियों को और भी सजीव और वास्तविक बनाता है।

2.2 प्रमुख लेखक और उनके कृतिया

हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण कई प्रमुख लेखकों द्वारा किया गया है। प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे लेखक हैं, जिनकी कृतियाँ मध्यवर्गीय जीवन के संघर्षों और दुविधाओं को बहुत गहराई से चित्रित करती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ "कफन" और "गबन" में आर्थिक संघर्ष और परिवार के साथ रिश्तों की जटिलताएँ दिखायी जाती हैं। प्रेमचंद ने समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी रचनाओं में स्थान दिया और मध्यवर्ग की सामाजिक समस्याओं पर विस्तार से विचार किया। यशपाल भी एक महत्वपूर्ण लेखक हैं, जिनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन की संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं। उनकी कृतियाँ, जैसे "दूसरी दुनिया" और "झूठा", मध्यवर्गीय जीवन की आपसी रिश्तों और सामाजिक न्याय की तलाश को दिखाती हैं। नपतउंस वर्मा की कहानियाँ भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं, जिनमें "रात का सफर" और "पारिवारिक कथा" जैसी कृतियाँ सामाजिक और मानसिक दबावों का चित्रण करती हैं, जो मध्यवर्गीय जीवन को प्रभावित करते हैं।

इन लेखकों की कृतियों में मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष और नैतिक दुविधाएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं।

2.3 समय के साथ मध्यवर्गीय पात्र का विकास

समय के साथ हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय पात्रों का चित्रण और उनके संघर्षों में भी बदलाव आया है। प्रारंभिक हिंदी साहित्य में, जैसे कि प्रेमचंद की कहानियों में, मध्यवर्गीय पात्रों को मुख्य रूप से आर्थिक संघर्ष और पारिवारिक दायित्वों में उलझा हुआ दिखाया गया था। उनका जीवन सामाजिक मान्यताओं और नैतिक दबावों से जूझता हुआ था, और उन्होंने समाज के निचले तबकों की समस्याओं को भी प्रमुखता से उठाया।

पारंपरिक समय में, मध्यवर्गीय पात्र अक्सर जीवन के पारंपरिक तरीके अपनाने और समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने की कोशिश करते थे। लेकिन जैसे–जैसे भारतीय समाज में बदलाव आया और शहरीकरण, उपभोक्तावाद, और आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव बढ़ा, मध्यवर्गीय पात्रों का चित्रण भी बदलने लगा।

आज के हिंदी साहित्य में, जैसे निर्मल वर्मा और राजेंद्र यादव के लेखन में, मध्यवर्गीय पात्र अधिक आत्मनिर्भर और स्वतंत्र दिखते हैं। उनका जीवन अब केवल पारंपरिक और सामाजिक दबावों से जूझने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सपनों और आकांक्षाओं के लिए भी संघर्ष कर रहे हैं।

इस प्रकार, समय के साथ इन पात्रों की मानसिकता, संघर्ष और जीवनशैली में एक बड़ा परिवर्तन आया है, जो हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन के विकास को दर्शाता है।

3 साहित्य समीक्षा

1. नामवर सिंह (2001)

नामवर सिंह ने अपने आलोचनात्मक लेखों में हिंदी कहानी को मध्यवर्गीय चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना है। उनके अनुसार प्रेमचंद के बाद की हिंदी कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की आकांक्षाएँ, कुंठाएँ, नैतिक द्वंद्व और सामाजिक यथार्थ अधिक गहराई से उभरते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि मध्यवर्ग न तो पूर्णतः शोषित है और न ही शोषक, बल्कि वह संघर्ष और समझौते के बीच जीने वाला वर्ग है।

2. कमलेश्वर (2004)

कमलेश्वर ने आधुनिक हिंदी कहानी में मध्यवर्गीय जीवन की मानसिक संरचना का विश्लेषण किया है। उनका मानना है कि आजादी के बाद की हिंदी कहानी में नौकरी, परिवार, विवाह, आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक दिखावे जैसे विषयों के माध्यम से मध्यवर्ग की पहचान स्पष्ट होती है। उनकी समीक्षा में मध्यवर्ग की दोहरी मानसिकता विशेष रूप से उभरती है।

3. शिवकुमार मिश्र (2007)

शिवकुमार मिश्र ने अपने शोध–पत्र में बताया कि नई कहानी आंदोलन ने मध्यवर्गीय जीवन को केंद्र में रखकर कथा–संरचना को बदला। उन्होंने मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष दिया कि मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ अब बाहरी घटनाओं से अधिक आंतरिक संघर्षों में अभिव्यक्त होता है।

4. राजेंद्र यादव (2009)

राजेंद्र यादव ने हिंदी कहानी को मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक दस्तावेज माना है। उनके अनुसार मध्यवर्गीय पात्र नैतिक आदर्शों और व्यावहारिक मजबूरियों के बीच फंसे हुए दिखाई देते हैं। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि मध्यवर्गीय जीवन में स्त्री की स्थिति कहानीकारों के लिए एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभरी है।

5. मैनेजर पांडेय (2011)

मैनेजर पांडेय ने हिंदी कथा साहित्य को सामाजिक संरचना से जोड़कर देखा है। उनके शोध के अनुसार मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण केवल आर्थिक स्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सांस्कृतिक मूल्य, विचारधारात्मक संकट और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया भी शामिल है। उन्होंने इसे यथार्थवाद की सशक्त अभिव्यक्ति माना है।

4 शोध-प्रणाली

4.1 शोध का स्वरूप

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध–डिजाइन पर आधारित है। इसमें हिंदी कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मानसिक स्थितियों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है।

4.2 अध्ययन का क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी साहित्य है, जिसमें नई कहानी एवं समकालीन कहानी विशेष रूप से सम्मिलित हैं।

4.3 नमूना चयन

इस शोध के लिए 10 प्रमुख हिंदी कहानीकारों की 25 चयनित कहानियों को नमूना बनाया गया है।

चयनित लेखक दृ प्रेमचंद, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी, उदय प्रकाश आदि।

4.4 डेटा संग्रह विधि

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमेंकृ

- प्रकाशित कहानी–संग्रह
- शोध–प
- आलोचनात्मक ग्रंथ
- साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएँ

का उपयोग किया गया है।

5 डेटा विश्लेषण

सारणी 1 : कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के प्रमुख विषय

विषय	कहानियों की संख्या	प्रतिशत
आर्थिक संघर्ष	8	32%
पारिवारिक तनाव	6	24%
मानसिक द्वंद्व	5	20%
सामाजिक असुरक्षा	4	16%
मूल्य-संघर्ष	2	8%
कुल	25	100%

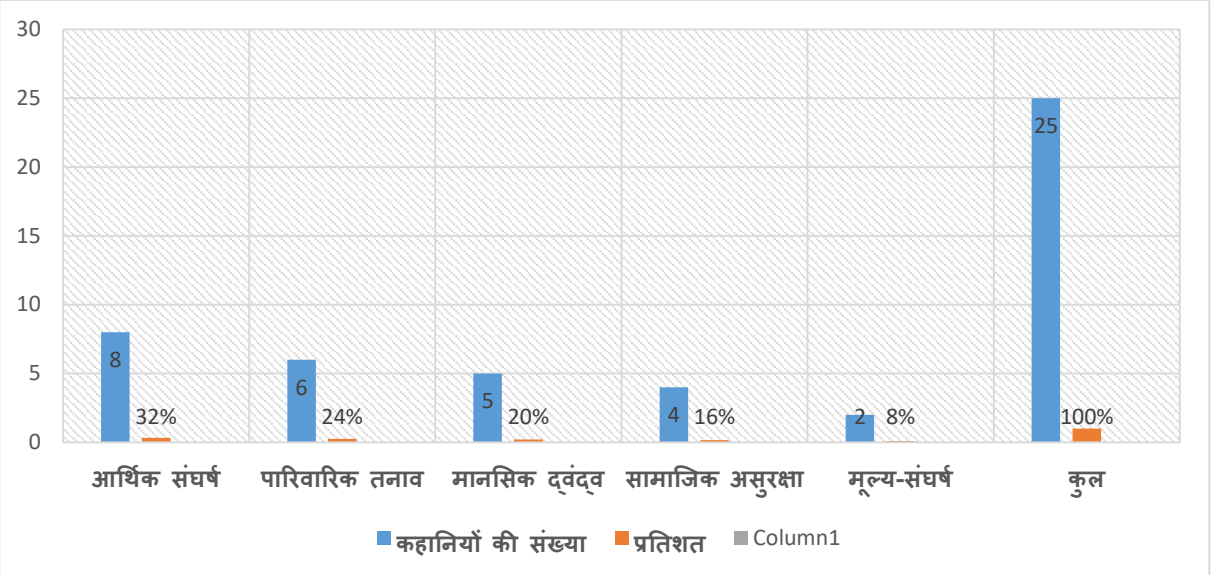

व्याख्या

सारणी से स्पष्ट है कि आर्थिक संघर्ष (32%) हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का प्रमुख विषय है, जो इस वर्ग की अस्थिर आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

सारणी 2 : मध्यवर्गीय जीवन के प्रस्तुतीकरण की प्रवृत्तियाँ

प्रवृत्ति	कहानियाँ	प्रतिशत
यथार्थवादी	12	48%
मनोवैज्ञानिक	7	28%
प्रतीकात्मक	4	16%
व्यंग्यात्मक	2	8%
कुल	25	100%

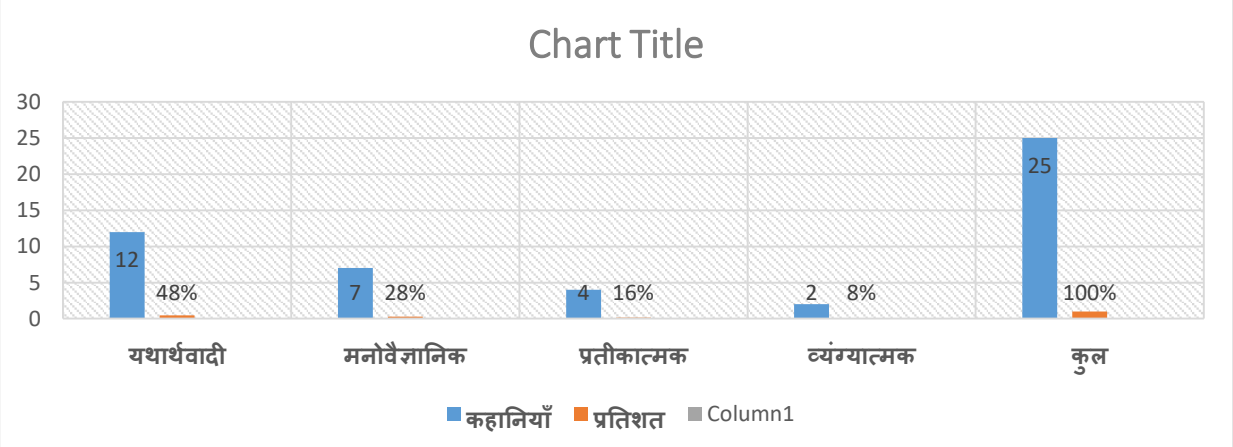

व्याख्या

अधिकांश कहानियाँ यथार्थवादी प्रवृत्ति (48%) की हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि कहानीकार मध्यवर्गीय जीवन को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं।

6. चर्चा

हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण सामाजिक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति है। मध्यवर्ग वह वर्ग है जो न तो पूर्णतः संपन्न है और न ही अत्यंत निर्धन, बल्कि निरंतर संघर्ष और समायोजन की स्थिति में रहता है। हिंदी कहानीकारों ने इस वर्ग की आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक तनाव, मानसिक द्वंद्व और सामाजिक दबावों को गहराई से चित्रित किया है।

प्रेमचंद की कहानियों में मध्यवर्गीय नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी दिखाई देती है, जबकि नई कहानी के रचनाकारों ने मध्यवर्ग की आंतरिक कुंठाओं, अकेलेपन और संबंधों के विघटन को प्रमुखता दी है। समकालीन कहानियों में बाजारवाद और उपभोक्तावाद के प्रभाव से मध्यवर्गीय जीवन और अधिक जटिल हो गया है।

चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी कहानी केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय समाज का दर्पण है, जो उसके बदलते मूल्यों और मानसिक संरचना को उजागर करता है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण अत्यंत यथार्थपरक, संवेदनशील और बहुआयामी है। कहानीकारों ने मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को केवल बाह्य घटनाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसके मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को भी गहराई से उकेरा है।

आर्थिक अस्थिरता, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ और व्यक्तिगत आकांक्षाएँकृये सभी तत्व मध्यवर्गीय जीवन को जटिल बनाते हैं। हिंदी कहानियों में यह वर्ग निरंतर संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है, जिससे पाठक उसमें अपनी ही छवि देख पाता है।

अतः कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण सामाजिक यथार्थ की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है, जो समाज को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, नामवर. (2001). *कहानी नई कहानी.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. कमलेश्वर. (2004). *नई कहानी की भूमिका.* नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
3. यादव, राजेंद्र. (2009). *हिंदी कहानी: अनुभव और यथार्थ.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. पांडेय, मैनेजर. (2011). *साहित्य और समाज.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. मिश्र, शिवकुमार. (2007). *नई कहानी आंदोलन और यथार्थ.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
6. साहनी, भीष्म. (2010). *कहानियाँ और समय.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. भंडारी, मन्नू. (2012). *स्त्री, समाज और कथा.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
8. सिंह, विजय मोहन. (2014). *कहानी का समाजशास्त्र.* नई दिल्ली: आधार प्रकाशन।
9. उपाध्याय, रमेश. (2013). *समकालीन हिंदी कहानी: प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
10. शर्मा, नीलम. (2016). "हिंदी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ." *हिंदी साहित्य शोध पत्रिका,* 8(2), 45–52।